Daadu Ki Vaani
समाज विकासमाला
दादू की वाणी
सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

समाज-विकास-माला : २७

दादू की वाणी

संग्राहिका
शशिकला

सम्पादक
यशपाल जैन

१९५८

सस्ता साहित्य मंडल-प्रकाशन

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल
नई दिल्ली

दूसरी बार : १९५६
मूल्य
छ: आना

मुद्रक
सुरेन्द्र प्रिंटर्स लि०,
दिल्ली

समाज-विकास-माला

हमारे देश के सामने आज सबसे बड़ी समस्या करोड़ों आदमियों की शिक्षा की है। इस दिशा में सरकार की ओर से यदि कुछ कोशिश हो रही है तो वही काफी नहीं है। यह ड़ाब काम सबकी सहायता के बिना पार नहीं पड़ सकेगा। बालकों तथा प्रौढ़ों की पढ़ाई की तरफ जबसे ध्यान गया है, ऐसी किताबों की मांग बढ़ गई है, जो बहुत ही आसान हों, जिनके विषय रोचक हों, जिनकी भाषा मुहावरेदार और बोलचाल की हो और जो मोटे टाइप में बढ़िया छपी हों।

इस पुस्तक-माला को हमने इन्हीं बातों को सामने रख कर चालू किया है। इसमें कई पुस्तकें निकल चुकी हैं। इन सबकी भाषा बड़ी आसान है। विषयों का चुनाव सावधानी से किया गया है। छपाई-सफाई के बारे में भी विशेष ध्यान रक्खा गया है। हर किताब में चित्र भी देने की कोशिश की है।

यदि पुस्तकों की भाषा-शैली, विषय और छपाई में पाठकों को सुधार की गुंजाइश मालूम हो तो उसकी सूचना निस्संकोच देने की कृपा करें।

दूसरा संस्करण

बड़े हर्ष की बात है कि इस पुस्तक का दूसरा संस्करण इतनी जल्दी प्रकाशित हो रहा है। इस माला की सभी पुस्तकें पाठकों को पसंद आ रही हैं, इससे हमें बड़ा आनन्द होता है। हमें विश्वास है कि इन सामयिक और उपयोगी पुस्तकों को पाठक चाव से पढ़ेंगे और इनके प्रचार में हाथ बटायेंगे।

—मंत्री

पाठकों से

कबीर, रहीम, गिरिधर आदि की तरह दादू का नाम भी हिन्दी के पाठक भली प्रकार जानते हैं। उन्होंने बहुत-से दोहे और पद लिखे हैं और उनमें नीति की अच्छी-अच्छी बातें कही हैं। जितने संत कवि हुए हैं, उन्होंने सबसे अधिक जोर इस बात पर दिया है कि आदमी अपने को पहचाने, दुनिया के मायाजाल से बचे और अपने जीवन का हर दिन और हर सांस दूसरों की भलाई में खर्च करे। दादू की वाणी भी यही बताती और सिखाती है।

संतों की वाणी हमेशा ताज़ी होती है। यही कारण है कि सैकड़ों-हज़ारों वर्ष बाद भी लोग उन्हें चाव से पढ़ते हैं और उनसे फ़ायदा उठाते हैं।

दादू के दोहे बहुत ही सरल हैं। हमें आशा है कि आप इन्हें ध्यान से पढ़ेंगे और उन्होंने जो अच्छी-अच्छी बातें बताई हैं, उनपर विचार करके अपने जीवन में अमल करेंगे।

—संपादक

संत दादूदयाल

दादू की वाणी

: १ :

दादूदयाल कौन थे ?

एक बार एक ब्राह्मण को अहमदाबाद की साबरमती नदी में एक बच्चा बहता हुआ मिला। ब्राह्मण का नाम था लादूराम। वह बच्चे को अपने घर ले आया और अपने बच्चे की तरह उसे पाला-पोसा। यही बालक आगे चलकर दादू के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

कहा जाता है कि जब दादू ११ वर्ष के थे, भगवान् ने उन्हें दर्शन देकर उपदेश दिया था। दादू पर इस उपदेश का बड़ा असर पड़ा। १२ वर्ष की उम्र में ही वह सत्संग के लिए घर से निकल पड़े। संसार के सुखों का मोह छोड़कर साधु-संतों की सेवा में अपने दिन बिताने लगे। माता-पिता इससे बड़े हैरान हुए। उनको डर लगा कि कहीं वह साधु न बन जायं। उन्होंने उनका विवाह कर दिया; लेकिन जिसे भगवान रास्ता दिखाते हैं, उसे दुनिया की कौनसी शक्ति बाँध सकती है ?

कुछ ही समय बाद दादू फिर घर से निकल पड़े और पैदल-यात्रा करते और लोगों को ज्ञान का उपदेश देते हुए राजस्थान आगये। वहाँ वह रुई धुनने का काम करने लगे। साथ ही लोगों को उपदेश देते रहे।

एक बार गाँव का काजी उनसे नाराज हो गया। उसने उन्हें दण्ड दिया; लेकिन संयोग से उसके कुछ ही दिन बाद वह बड़े कष्ट भोगकर मर गया। लोगों ने समझा कि दादू के प्रभाव से ऐसा हुआ है। अब क्या था, उनकी ख्याति चारों ओर फैल गई। दूर-दूर से श्रद्धालु लोग आने लगे और उनके सत्संग से लाभ उठाने लगे।

दादू ने १२ साल तक कठिन साधना की। इससे उन्हें योग की सिद्धि मिल गई। कहते हैं, उन्हें वचन-सिद्धि भी प्राप्त हो गई थी; लेकिन वह करामात को पाप समझकर दूर ही रहते थे।

दादू बड़े दयालु और साधु पुरुष थे। क्रोध तो उन्हें छू तक नहीं गया था। यही कारण था कि लोग उन्हें 'दयालु' जैसे प्यार भरे नाम से पुकारते थे। एक दिन वह अपनी कोठरी में बैठे भगवान का ध्यान कर रहे थे। कुछ बुरे लोगों ने उनकी कोठरी का दरवाजा ईंटों से चिनवा दिया। जब वह ध्यान से उठे तो बाहर

जाने का रास्ता न मिला। बिना किसीपर क्रोध किये वह फिर ध्यान में लग गए। जब दूसरे लोगों को यह बात मालूम हुई तो उन्होंने फौरन दीवार गिरवा दी। उन्होंने उन दुष्ट लोगों को भी सजा देनी चाही, लेकिन दादू ने उन्हें ऐसा करने से रोक दिया। उन्होंने कहा "अरे भाई, उन्हें क्यों सजा देते हो ? उनकी तो मुझ-पर कृपा ही हुई, जो मुझे इतने समय तक भगवान का ध्यान करने को मिला।" उनकी दयालुता और धीरज को देखकर लोग दंग रह गए।

उन दिनों अकबर दिल्ली का बादशाह था। वह विद्वानों और ज्ञानियों का बड़ा आदर करता था। वह दादू से भी मिला। उसने उनको मान के साथ फतहपुर-सीकरी बुलवाया। जब वह उनसे मिला तो उसने पूछा, "खुदा की क्या जात है ? उसका रंग कैसा है ? उसका अंग और वजूद[1] क्या है ?"

दादू ने उत्तर दिया :

"इसक[2] अलाह की जाति है, इसक अलाह को रंग।
इसक अलाह औजूद है, इसक अलाह को अंग॥"

इस उत्तर से अकबर बड़ा खुश हुआ। उसके मन में दादू के लिए बड़ा आदर पैदा हो गया।

---

१. सत्ता २. प्रेम

दादू पढ़े-लिखे नहीं थे, लेकिन वह अनुभवी, विचारशील और ऊँचे चरित्र के आदमी थे। उनके तेज, त्याग और दयालुता ने बहुत-से लोगों को उनकी ओर खींच लिया था। संवत् १६६० ई० में उन्होंने नारायणा नामक गाँव में अपना चोला छोड़ा। उनकी याद में आज भी वहाँ हर साल मेला लगता है और उनके बहुत-से भक्त वहाँ जमा होते हैं।

दादू कहते थे कि भक्त बनने के लिए आदमी में शील और नम्रता होनी चाहिए। जो आदमी 'डर' से डर जाता है वह भक्त नहीं हो सकता। उनका यह भी कहना था कि जो सिर उतार कर रखने को तैयार हो, वही सच्चा वीर बन सकता है, वही सच्चा भक्त बन सकता है। प्रेम को ही वह भगवान का रूप-रंग और जाति मानते थे। इसीलिए वह हमेशा भगवान के प्रेम में लीन रहते थे।

दादू संत थे। उन्होंने अपनी बात को सीधी-सादी भाषा में कहा है। उनके विरह के पद हृदय पर गहरा असर डालते हैं। उन्होंने अपने पदों में जगह-जगह प्रेम के बड़े सुन्दर चित्र खींचे हैं। वह कहते थे कि मुझे मोक्ष नहीं चाहिए। मोक्ष का अर्थ है भगवान के एक

अंश में समा जाना। यह कोई बड़ा पुरुषार्थ नहीं है। पुरुषार्थ तो प्रेम ही है।

प्रेम की तरह भक्ति पर भी वह बड़ा जोर देते थे कि जिस तरह प्रेम का पार नहीं है, उसी तरह भक्ति का भी पार नहीं है। कबीर के बोलों का उनपर काफ़ी असर था और वह उन्हें अपना गुरु समझते थे—

"साचा सबद कबीर का, मीठा लागै मोहि।
दादू सुनताँ परम हित, कैसा आनन्द होहि॥"

किंतु कबीर की तरह उन्होंने सत्य के मार्ग से भटकनेवाले पंडितों, काजियों और मुल्लाओं पर चोट नहीं की। उन्हें खंडन में रुचि नहीं थी। उन्होंने अपनी बात हमेशा प्रेम और नम्रता से कही।

दादू के मरने के बाद उनके नाम से एक पंथ चल पड़ा, जो 'दादू-पंथ' कहलाता है। दादू-पंथ में चार प्रकार के साधु हैं—खाकी, विरक्त, मायाधारी और नागे। खाकी साधु शरीर पर भस्म लगाते हैं और सिर पर जटाएँ रखते हैं। विरक्त कोपीन बाँधते हैं और भगुआ वस्त्र पहनते हैं। हाथ में तूँबा रखते हैं। नागे और मायाधारी सफेद कपड़े पहनते हैं और खेती-बारी आदि धंधों के द्वारा अपनी गुजर-बसर करते हैं। नागे साधु बड़े साहसी होते हैं।

दादू-पंथी लोग सिर पर चोटी नहीं रखते, तिलक नहीं लगाते हैं और गले में कंठी पहनते हैं। वे अपने हाथ में सुरमनी रखते हैं और एक-दूसरे से 'संतराम' कहकर मिलते हैं।

अब आप आगे दादू के पद पढ़िये।

: २ :

दादू की वाणी

सुख का साथी जगत सब, दुख का नाहीं कोइ ।
दुख का साथी सांइयां, दादू सतगुरु होइ ।।

दादू इस संसार में, मुझसा दुखी न कोइ ।
पीव[1] मिलन के कारणे, मैं जग भरिया रोइ ।।

ना वहु मिलै न मैं सुखी, कहु क्यौं जीवन होइ ।
जिन मुझकौं घाइल किया, मेरी दारू [2]सोइ ।।

ज्यूं अमली[3] कै चित अमल[4], सूरे कै संग्राम ।
निर्धन कै चित धन बसै, यों दादू कै राम ।।

देह पियारी जीव कौं, जीव पियारा देह ।
दादू हरि-रस पाइये, ऐसा होइ सनेह ।।

रोम रोम रस प्यास है, दादू करहि पुकार ।
राम घटा दल उमंगि करि, बरसहु सिरजनहार ।।

राति दिवस का रोवणा, पहर पलक का नांहि ।
रोवत रोवत मिलि गया, दादू साहिब मांहि ।।

---

१. प्रीतम, ईश्वर २. दवा ३. नशा करनेवाला ४. नशा

जहां राम तहँ मैं नहीं, मैं तहँ नाहीं राम ।
दादू महल बरीक[1] है, द्वै कों नाहीं ठाम ।।

दादू है कौं भय घणां, नाहीं कौं कुछ नांहि ।
दादू नांहि होइ रहु, अपणे साहिब मांहि ।।

दादू दरिया प्रेम का, तामैं झूलैं दोइ ।
इक आतम परमात्मा, एकमेक रस होइ ।।

जैसे नैना दोइ हैं, ऐसे हूँहि अनन्त ।
दादू चन्द-चकोर ज्यों, रस पीवै भगवन्त[2] ।।

दादू रहता[3] राखिये, बहता[4] देइ बहाइ ।
बहते संगि न आइये, रहते सौं ल्यौ लाइ ।।

साहिब का दर छाँड़िकरि, सेवग कहीं न जाइ ।
दादू बैठा मूल गहि, डालौं फिरै बलाइ[5] ।।

सब आया उस एक में, डाल पान फल फूल ।
दादू पीछे क्या रह्या, जब निज पकड़ा मूल ।।

आपा पर[6] सब दूरि कर, राम नाम-रस लाग ।
दादू औसर जात है, जागि सकै तो जाग ।।

सो कुछ हमथैं ना भया, जापरि रीझै राम ।
दादू इस संसार में, हम आये बेकाम ।।

---

१. तंग, सूक्ष्म २. भाग्यवान, भक्त ३. स्थिर ४. अनित्य
५. विपत्तियां ६. अपना-पराया

कीया मन का भावता, मेटी आग्याकार ।
क्या ले मुख दिखलाइये, दादू उस भरतार[१] ।।

कुछ खाता कुछ खेलता, कुछ सोवत दिन जाइ ।
कुछ बिषिया रस बिलसता, दादू गये बिलाइ[२] ।।

दादू नगरी चैन तब, जब इक राजी[३] होइ ।
दोइ राजी दुख दुंद में, सुखी न बैसै कोइ ।।

ज्यों घुन लागै काठ कौं, लोहै लागै काट[४] ।
काम किया घट जाजरा[५], दादू बाहर बाट[६] ।।

आपै मारै आपकौं, आप आपकौं खाइ ।
आपै अपना काल है, दादू कहि समझाइ ।।

काल कनक[७] अरु कामिनी, परहरि इनका अंग ।
दादू सब जग जलि मुआ, ज्यौं दीपक जोति पतंग ।।

बिना भुवंगम[८] हम डसे, बिन जल डूबे जाइ ।
बिनहीं दावक ज्यौं जले, दादू कुछ न बसाइ ।।

सूरिज फटिक पषाण[९] का, तासौं तिमर न जाइ ।
साचा सूरिज परगटै, दादू तिमर नसाइ ।।

आपस कौं मारै नहीं, पर कौं मारन जाइ ।
दादू आपा मारे बिना, कैसे मिलै खुदाइ ।।

---

१. प्रभु २. समाप्त हो गया ३. एक राजा का राज ४. मोरचा ५. जर्जर, नए ६. सत्यानाश ७. सोना ८. सांप ९. बिल्लौर पत्थर

कहिबे सुनिबे मन खुसी, करिबा औरै खेल ।
बातौं तिमर न भाजई[1], बिन दीवा बाती तेल ।।
सब हम देख्या सोधिकरि[2], बेद कुरानों माहिं ।
जहाँ निरंजन पाइये, सो देस दूरि इत नाहिं ।।
मसि कागद के आसिरे, क्यों छूटै संसार ।
राम बिना छूटे नहीं, दादू भर्म बिकार ।।
कागद काले करि मुये, केते बेद पुरान ।
एकै आखिर[3] पीव का, दादू पढ़े सुजान ।।
दादू पाती[4] प्रेम की, बिरला बांचै कोइ ।
बेद पुरान पुस्तक पढ़े, प्रेम बिना क्या होइ ।।
अंतरगति औरै कछू, मुख रसना[5] कुछ और ।
दादू करणी और कुछ, तिनकों नाहीं ठौर ।।
दादू दून्यूं भरम हैं, हिन्दू तुरक गँवार ।
जे दुहुवाँ थैं रहित हैं, सो गहि तत्त बिचार ।।
पूरण ब्रह्म बिचारिये, सकल आतमा एक ।
काया के गुण देखिये, नाना बरण अनेक ।।
केई दौड़े द्वारका, केई कासी जांहि ।
केई मथुरा को चले, साहिब घटहीं मांहि ।।

---

१. दूर नहीं जाता २. खोज कर ३. अक्षर ४. पत्र
५. जिह्वा

मीत तुम्हारा तुम्ह कनें[1], तुमहीं लेहु पिछाणि ।
दादू दूरि न देखिये, प्रतिबिम्बा ज्यूं जाणि ।।
जे मति पीछै ऊपजै, सो मति पहिली होइ ।
कबहुं न होवै जी दुखी, दादू सुखिया सोइ ।।
दादू सहजैं होइगा, जे कुछ रचिया राम ।
काहेकौं कलपै मरै, दुखी होत बेकाम ।।
साहिब राखै तो रहै, काया मांहै जीव ।
हुक्मी[2] बन्दा उठि चलै, जबहिं बुलावै पीव ।।
पीछै कौं पग ना भरै[3], आगैं कौं पग देइ ।
दादू यह मत सूर का, अगम ठौर[4] को लेइ ।।
जे सिर सौंप्या राम कौं, सो सिर भया सनाथ ।
दादू दे ऊरण[5] भया, जिसका तिसकै हाथ ।।
सिर कै साटै[6] लीजिये, साहिबजी का नांव ।
खेलै सीस उतारिकरि, दादू मैं बलि जांव ।।
मन मनसा मारै नहीं, काया मारण जाहि ।
दादू बांबी मारिये, सर्प मरै क्यौं मांहि ।।
जे पहुँचे ते कहि गये, तिनकी एकै बात ।
सबे सयाने एकमत, उनकी एकै जात ।।

---

१. तुम्हारे पास २. आज्ञाकारी ३. रखता है ४. कठिन स्थान ५. ऋण-मुक्त ६. सौदे में

साध नदी, जल रामरस, तहां पखालै[1] अंग
दादू निर्मल मल गया, साधू जन के संग ॥

साध मिलै तब ऊपजै, हिरदै हरि का भाव ।
दादू संगति साध की, जब हरि करै पसाव[2] ॥

पर उपगारी सन्त सब, आये इहि कलि माँहि ।
पिवैं पिलावैं रामरस, आप सवारथ नाँहि ।

चन्द सूर पावक पवन, पाणी का मत सार ।
धरती अम्बर रातिदिन, तरवर फलैं अपार ॥

दादू इस संसार मैं, ये द्वै रतन अमोल ।
इक सांई अरु सन्तजन, इनका मोल न तोल ॥

जिँहि घटि दीपक राम का, तिँहि घटि तिमर न होइ ।
उस उजियारे जोति के, सब जग देखै सोइ ॥

घर बन माँहै सुख नहीं, सुख है सांई पास ।
दादू तासौं मन मिल्या, इन थैं भया उदास ॥

जे उपज्या सो बिनसिहै, कोई थिर न रहाइ ।
दादू बारी आपणी, जे दीसै सो जाइ ॥

देह रहै संसार मैं, जीव राम के पास ।
दादू कुछ व्यापै नहीं, काल-झाल[3] दुख त्रास ॥

---

१. धोये २. कृपा ३. ज्वाला

साहिब मारे ते मुये, कोई जीवै नांहि।
साहिब राखे ते रहे, दादू निज घर मांहि॥

काचा उछलै ऊफणै[1], काया हांडी मांहि।
दादू पाका मिलि रहै, जीव ब्रह्म द्वै नांहि॥

सब हम देख्या सोधिकरि, दूजा नाहीं आन।
सब घट एकै आत्मा, क्या हिन्दू मूसलमान॥

काहेकों दुख दीजिये, सांई है सब मांहि।
दादू एकै आत्मा, दूजा कोई नांहि॥

जिहिं घर निंद्या साध की, सो घर गये समूल।
तिनकी नीव न पाइये, नांव न ठांव न धूल॥

निंदक बपुरा जिनि मरै, पर उपगारी सोइ।
हमकूं करता ऊजला, आपण मैला होइ॥

दादू कीड़ा नर्क[2] का, राख्या चन्दन मांहि।
उलटि अपूठा[3] नर्क में, चन्दन भावे नांहि॥

बुरा बुरा सब हम किया, सो मुख कह्या न जाइ।
निर्मल मेरा सांइयां, ताकौं दोष न लाइ॥

राखणहारा राख तू, यहु मन मेरा राखि।
तुम बिन दूजा को नहीं, साधू बोलैं साखि॥

---

१. बहुत बकझक करता है, २. मैला, कचरा ३. घुस गया

जिनकी रख्या तूं करै, ते उबरे करतार।
जे तैं छाड़े हाथ थैं, ते डूबे संसार॥

हरि तरवर तत आत्मा, बेली करि बिसतार।
दादू लागै अमरफल[1], कोइ साधू सींचणहार॥

संगी सोई कीजिये, जे कबहूँ पलटि न जाइ।
आदि अंति बिहड़ैं[2] नहीं, तासन यहु मन लाइ॥

घीव दूध मैं रमि रह्या, ब्यापक सबही ठौर।
दादू बकता[3] बहुत हैं, मथि काढ़ैं ते और॥

दीवैं दीवा कीजिये[4], गुरमुख मारगि जाइ।
दादू अपने पीव का, दरसन देखै आइ॥

मानसरोवर माँहि जल, प्यासा पीवै आइ।
दादू दोष न दीजिये, घर घर कहण न जाइ॥

इक लख चन्दा आणि धरि, सूरज कोटि मिलाय।
दादू गुरु गोव्यंद बिन, तौभी तिमिर न जाय॥

दादू पड़दा भरम[5] का, रह्या सकल घटि छाइ।
गुरु गोव्यंद कृपा करै, तौ सहजैं मिटि जाइ॥

यहु मसीति[6] यहु देहुरा[7], सतगुरु दिया दिखाइ।
भीतरि सेवा बंदिगी, बाहरि काहे जाइ॥

---

१. मोक्ष २. अलग होना ३. बातें बनाने वाले ४. ज्योति से ज्योति जलाइए ५. अज्ञान ६. मस्जिद ७. मन्दिर।

मनहीं सूं मल ऊपजै, मनहीं सूं मल धोइ ।
सीख चली गुरु साध की, तौ तूं निरमल होइ ॥

घरि घरि[1] घट कोल्हू चलै, अमी महारस[2] जाइ[3] ।
दादू गुरु के ग्यान बिन, बिखै हलाहल खाइ ॥

का जाणौं कब होइगा, हरिसुमिरण इकतार ।
का जाणौं कब छोड़ि है, यहु मन विखै विकार ॥

ज्यूं जल पैसे[4] दूध में, ज्यूं पाणी में लूण ।
ऐसें आतमराम सौं, मन हठ साधै कूंण ॥

दादू यहु तन पींजरा, मांही मन सूवा[5] ।
एकै नांव अलाह का, पढ़ि हाफिज[6] हूवा ॥

दादू सब जग नीधना, धनवंता नहिं कोइ ।
सो धनवंता जाणिये, जाकै रामपदारथ होइ ॥

जिनका दर्पण ऊजला, सो दर्सण देखैं मांहि ।
जिसकी मैली आरसी, सो मुख देखै नांहि ॥

जैसे श्रवणां दोइ हैं, ऐसे हूँहिं अपार ।
राम-कथा-रस पीजिये, दादू बारम्बार ॥

आपा उरझें उरझिया, दीसै सब संसार ।
आपा सुरझें सुरझिया, यहु गुरु ग्यान बिचार ॥

---

१. घड़ी-घड़ी २. ब्रह्मानन्द ३. व्यर्थ जा रहा है ४. मिल जाता है ५. तोता ६. जिसे कुरान कंठ हो

राम तुम्हारे नांव बिन, जे मुख निकसै और ।
तौ अपराधी जीव कौं, तीनि लोक कत ठौर ।।

हरि भजि साफिल जीवना, पर उपगार समाइ ।
दादू मरणा तहँ भला, जहँ पसु-पंखी खाइ ।।

दादू जे जे चिति बसै, सोइ सोइ आवै चीति ।
बाहरि भीतरी देखिये, जाही सेती प्रीति[1] ।।

माया चेरी सन्त की, दासी उस दरबारि ।
ठकुराणी सब जगत की, तीन्यूं लोक मंझारि[2] ।।

मूरति घड़ी[3] पखाण की, कीया सिरजन हार ।
दादू सच सूझै नहीं, यूं डूबा संसार ।।

माया सांपणि सब डसै, कनक कामणी होइ ।
ब्रह्मा बिश्न महेस लौं, दादू बचै न कोइ ।।

पद जोड़ै साखी कहै, बिषै न छाड़ै जीव ।
पानी घालि बिलोइये, क्यौं करि निकसे घीव ।।

पत्थर पीवैं धोइकरि, पत्थर पूजें प्राण ।
अन्तिकाल पत्थर भये, बहु बूड़े इहि ग्यान ।।

दादू पैंड़े[4] पाप कै, कदे[5] न दीजै पांव ।
जिहिं पैंडे मेरा पिव मिलै, तिहिं पैंडे का चाव ।।

---

१. पहचान २. बीच ३. बनाई ४. रास्ते से ५. कभी

भावी-हीण जे पृथमी, दया-बिहूणा[1] देस ।
भगति नहीं भगवंत की, तहँ कैसा परवेस ।।

मेरा बैरी मैं मुवा, मुझे न मारै कोइ ।
मैं ही मुझकौं मारता, मैं मरजीवा होइ ।।

यहु घट काचा जल भरा, बिनसत नाहीं बार ।
यह घट फूटा जल गया, समझत नहीं गंवार ।।

ना घरि रह्या ना बन गया, ना कुछ किया कलेस ।
दादू मन ही मन मिल्या, सतगुरु के उपदेस ।।

सबद दूध घृत रामरस, कोइ साध बिलोबणहार ।
दादू अमृत काढिले[2], गुरमुखि गहै विचार ।।

झूठे अंधे गुर घणे[3], भरम[4] दिढ़ावैं[5] आइ ।
दादू साचा गुर मिले, जीव ब्रह्म ह्वै जाइ ।।

जहाँ रहूँ यहाँ राम सौं, भावै कंदलि[6] जाइ ।
भावै[7] गिरि-परबति रहूँ, भावै ग्रे[8] बसाइ ।।

साई सेवैं सब भले, बुरा न कहिये कोइ ।
सारौं मांहै सो बुरा, जिस घटि नांव न होइ ।।

सब सुख सरग पयाल[9] के, तोलि तराजू बाहि ।
हरि-सुख एकै पलक का, ता समि कह्या न जाहि ।।

---

१. निर्दयी २. निकालना ३. बहुत ४. मोह ५. पक्का करना ६. गुफा में ७. चाहे ८. घर ९. पाताल

बिरह-बियोग न सहि सकौं, मोपै रह्या न जाइ ।
कोइ कहो मेरे पीव कौं, दरस दिखावै आइ ।।

मिश्री मांहैं मेलि करि, मोल बिकाना बंस[1] ।
यौं दादू महंगा भया, पारब्रह्म मिलि हंस[2] ।।

सेवक सांई बस किया, सौंप्या सब परिवार ।
तब साहिब सेवा करै, सेवग के दरबार ।।

दादू हरिरस पीवतां, कबहूँ अरुचि न होइ ।
पीवत प्यासा नित नवा, पीवणहारा सोइ ।।

पतिब्रता गृह आपणै, करै खसम[3] की सेव ।
ज्यौं राखै त्यौंही रहै, आग्याकारी टेव[4] ।।

पाका मन डोलै नहीं, निहचल रहै समाइ ।
काचा मन दह दिसि फिरै, चंचल चहुँ दिसि जाइ ।।

दादू सब थे एक के, सो एक न जाना ।
जणे जणे का ह्वै गया, यहु जगत दिवाना[5] ।।

विष का अमृत करि लिया, पावय का पाणी ।
बांका[6] सूधा करि लिया, सो साध बिनाणी[7] ।।

---

१. बांस की खपच्ची, जिसपर मिश्री को जमाते हैं २. जीवात्मा
३. पति ४. स्वभाव ५. अन्धा-अनुयाई ६. टेढ़ा
७. विज्ञानी

सुरग नरक संसै नहीं, जीवन मरण भै नांहि।
रामविमुख जे दिन गये, सो सालैं[1] मन मांहि ।।

काहे कूँ दुख दीजिये, घट घट आतम राम।
दादू राम संतोषिये[2], यह साधू का काम ।।

दादू राम संभालि ले, जब लग सुखी सरीर।
फिरि पीछै पछिताइगा, जब तनमन धरै न धीर ।।

दूजा नैन न देखिये, स्रवणहुँ सुनै न जाइ।
जिभ्या आन[3] न बोलिये, अंग न और सुहाइ ।।

सु तूं राखै साइयां, तौ मारि न सक्कै कोइ।
बाल न बाँका[4] करि सकै, जो जग बैरी होइ ।।

सोइ हमारा साँइयाँ[5], जे सब का पूरणहार।
दादू जीवता मरण का, जाके हाथ विचार ।।

जब जीवनमूरी[6] पाइये, तब मरिबा कौन बिसाहि[7]।
दादू अमृत छाड़िकरि, कौन हलाहल खाहि ।।

सोचि करै सो सूरिवां[8], करि सोचै सो कूर[9]।
करि सोच्यां मुख स्याम[10] ह्वै, सोचि किया मुख नूर[11]।।

---

१. दुखी करते है २. प्रसन्न रखिए ३. और कुछ ४. कष्ट न पहुँचा सकना ५. प्रभु ६. संजीवनी बूटी ७. मोल ले ८. पुरुषार्थी ९. मूर्ख १०. कलंकित ११. उज्ज्वल

जब झूझै[1] तब जाणिये, काछि खड़े[2] क्या होइ ।
चोट मुंहै मुंह[3] खाइगा, दादू सूरा सोइ ।।

सबद तुम्हारा ऊजला, चिरिया क्यौं कारी ।
तुंहीं तुंहीं निसदिन करौं, बिरहा की जारी ।।

प्राण हमारा पीव सों, यौं लागा रहिये ।
पुहप बास घृत दूध मैं, अब कासौं कहिये ।।

सोई सेवग राम का, जिसै न दूजी चित ।
दूजा को भावै नहीं, एक पियारा मित[4] ।।

काइर काम न आवई, यहु सूरे का खेत ।
तन मन सौंपै राम कूँ, दादू सीस सहेत ।।

धरती करते एक डग[5], दरिया करते फाल[6] ।
हाँकौं परबत फाड़ते, सो भी खाये काल ।।

दादू देखत ही भया, स्याम बरण ते सेत[7] ।
तन मन जोबन सब गया, अजहुँ न हरि सूँ हेत ।।

दादू सम करि देखिये, कुंजर[8] कीट[9] समान ।
दादू दुबिधा दूरि करि, तजि आपा अभिमान ।।

---

१. लड़ें २. लड़ाई का भेष सजाकर ३. आमने-सामने ४. प्रेमी, ईश ५. कदम ६. फलांग मारकर पार होना ७. काले से सफेद, अर्थात् जवानी से बूढ़े ८. हाथी ९. कीड़ा

जागि रे रैंणि विहाणीं[1] जाइ जन्म अजुली कौ पाणीं[2] ।
घड़ी घड़ी घड़ियाल बजावै,जेदिन जाइ सो बहुरिन आवै ।।
सूरिज चंद कहै समझाइ, दिन दिन आव[3] घटती जाइ ।
सरवर पांणीं तरवर छाया निसदिन काल गरासै[4] काया ।।
हंस बटाऊ[5] प्राणपयाना[6], दादू आतमराम न जाना ।।

सोई साध-सिरोमणि, गोविंद-गुण गावै ।
राम भजै बिषिया तजै, आपा न जनावै[7] ।।
मिथ्या मुखि बोलै नहीं, परन्यंदा नांहीं ।
औगुण छाड़ै गुण गहै, मन हरिपद मांहीं ।।
निबैंरी सब आतमा, पर आतम जानै[8] ।
सुखताई[9] समता गहै, आपा नहीं आनैं ।।
आपा पर अंतद नहीं, निर्मल निज सारा ।
सतवादी साचा कहै, लैलीन बिचारा[10] ।।
निर्भै भजि न्यारा रहै, काहू लिपत न होई ।
दादू सब संसार मैं ऐसा जन कोई[11] ।।

---

१. बीत गई २. चुल्लू का जल ३. आयु ४. ग्रस रहा है, समाप्त कर रहा है ५. पथिक, यात्री ६. मर जाना ७. अपने आपको बड़ा नहीं जतलाना ८. सबके साथ बराबरी का बर्ताव रखता है, ९. प्रसन्नता १०. तत्त्वज्ञान में लगा हुआ ११. बिरला भगवान का भक्त ।

राम नाम जिनि[1] छांडै कोई।
राम कहत जन निर्मल होई॥
राम कहत सुख संपति सार।
राम नाम तिरि[2] लंघै पार[3]॥
राम कहत सुधि बुधि मति पाई।
राम नाम जिनि छांडहु भाई॥
राम कहत जन निर्मल होइ।
राम नाम कह कुसमल[4] धोइ॥
राम कहत को को नहिं तारे।
यहु तत दादू प्राण हमारे॥

× × × ×

मन निर्मल तन निरमल भाई।
आन[5] उपाइ विकार न जाई॥
जो मन कोयला[6] तौ तन कारा।
कोटि करै नहिं जाइ बिकारा॥
जो मन बिसहर[7] तौ तन भुवंगा।
करै उपाइ बिषै फुनि[8] सँगा॥

---

१. मत २. तरकर ३. पार हो जाय, मुक्त हो जाय ४. पाप
५. दूसरा ६. काला, खोट से भरा ७. साँप ८. फिर

मन मैला तन उज्जल नांहीं ।
बहुत पचिहारे[1] बिकार न जाहीं ॥
मन निर्मल तन निर्मल होई ।
दादू साच बिचारै कोई ॥

× × × ×

सरनि तुम्हारी केसवा, मैं अनंत सुख पाया ।
भाग बड़े तूं भेटिया,[2] हौं चरणौं आया ॥
मेरी तपति[3] मिटी तुम्ह देखतां, सीतल भयो भारी ।
भवबंधन मुकता भया, जब मिल्या मुरारी ॥
भरम-भेद सब भूलिया, चेतनि[4] चित लाया ।
पारस सूं परचा भया, उनि सहजि लखाया ॥
मेरा चंचल चित्त निहचल[5] भया, इब[6] अनत न जाई ।
मगन भया सर[7] बेधिया, रस पीया अघाई[8] ॥
सनमुख ह्वै तैं सुख दीया यहु दया तुम्हारी ।
दादू दरसन पावैई, पीव प्राण अधारी ॥

---

१. यत्न करते थक गये २. मिला ३. बेचैनी, जलन ४. परमात्मा में
५. स्थिर ६. अब ७. बाण ८. भरपूर

हिंदू तुरक[1] न जाणौं दोइ ।
सांई सबनि का सोई है रे, और न दूजा देखौं कोइ ॥
कीट पतंग सबै जोननि में, जल थल संगि समानां सोइ ।
पीर पैगम्बर देवा दानव, मीर मलिक मुनिजन कौं मोंहि ॥
कर्ता है रे सोई चीन्हौ[2] जिनिवै[3] क्रोध करै रे कोइ ।
जैसें आरसी मंजन कीजै[4], राम रहीम देही तन धोइ ॥
सांई केरी सेवा कीजै, पायौ धन काहे कौं खोइ ।
दादू रे जन हरि जपि लीजै, जनमि जनमि जे
सुरिजन[5] होइ ॥

●

१. मुसलमान २. पहचानो ३. निश्चय ही नहीं ४. साफ करते हैं ५. सुलझन, मुक्ति ।

'मंडल' द्वारा प्रकाशित प्राप्य साहित्य

गांधीजी लिखित

१ प्रार्थना प्रवचन १ भाग ३)
२ ,, ,, २ भाग २॥)
३ गीता-माता ४)
४ पंद्रह अगस्त के बाद १॥),२)
५ धर्मनीति १॥),२)
६ द०अफ्रीका का सत्याग्रह ३॥)
७ मेरे समकालीन ५)
८ आत्मकथा ५)
९ गीता-बोध ॥)
१० अनासक्तियोग १॥)
११ ग्राम-सेवा ।=)
१२ मंगल-प्रभात ।=)
१३ सर्वोदय ।=)
१४ नीति-धर्म ।=)
१५ आश्रमवासियों से ।=)
१६ राष्ट्रवाणी १)
१७ सत्यवीर की कथा ।)
१८ संक्षिप्त आत्मकथा १), १॥)
१९ हिंद-स्वराज्य ॥।)
२० अनीति की राह पर १)
२१ बापू की सीख ॥)
२२ गांधी-शिक्षा (तीन भाग) १=)
२३ आज का विचार २ भाग ॥।)
२४ ब्रह्मचर्य (दो भाग) १॥।)
२५ अगर मैं डिक्टेटर होता ।)
२६ शराबबन्दी करें ? ।)
२७ स्वराज्य में कोई अछूत नहीं ।)

विनोबाजी लिखित

२८ विनोबा-विचार : २ भाग ३)
२९ गीता-प्रवचन १), १॥)
३० शान्ति-यात्रा १॥)
३१ जीवन और शिक्षण २)
३२ स्थितप्रज्ञ-दर्शन १)
३३ ईशावास्यवृत्ति ॥।)
३४ ईशावास्योपनिषद् =)
३५ सर्वोदय-विचार १=)
३६ स्वराज्य-शास्त्र ॥)
३७ भू-दान-यज्ञ ।)
३८ गांधीजी को श्रद्धांजलि ।=)
३९ राजघाट की संनिधि में ॥=)
४० विचार-पोथी १)
४१ सर्वोदय का घोषणा-पत्र ।)
४२ जमाने की मांग =)

नेहरूजी लिखित

४३ मेरी कहानी ८)
४४ मेरी कहानी संक्षिप्त २॥)
४५ हिन्दुस्तान की समस्यायें २)
४६ लड़खड़ाती दुनिया २)
४७ राष्ट्रपिता २)
४८ राजनीति से दूर २)
४९ हमारी समस्यायें ॥।)
५० विश्व-इतिहास की झलक २१)
५१ हिंदुस्तान की कहानी (सं.) ५)

प्रगति के पथ पर

५२ नया भारत ॥)
५३ आजादी के आठ साल ।)
५४ सिंचाई और बिजली ।)
५५ गांवों के उद्योग-धंधे ।)
५६ अन्न समस्या का हल ।)
५७ सामुदायिक योजना ।)

अन्य लेखकों की

५८ गांधीजी की देन १॥)
५९ गांधी-मार्ग =)
६० महाभारत-कथा (राजाजी) ५)
६१ कुब्जा सुन्दरी ,, २)
६२ शिशु-पालन ,, ॥)
६३ कारावास-कहानी (सु.नै.) १०)

६४ गांधी की कहानी(लु. फि.) ४)
६५ भारत-विभाजन की कहानी ४)
६६ बापू के चरणों में २॥)
६७ इंग्लेंड में गांधीजी २)
६८ बा, बापू और भाई ॥)
६९ गांधी-विचार-दोहन १॥)
७० सत्याग्रह-मीमांसा ३॥)
७१ बुद्धवाणी (वियोगी हरि) १)
७२ सन्त सुधासार(वि०हरि) ११)
७३ संतवाणी „ १॥)
७४ श्रद्धाकण „ १)
७५ अयोध्याकाण्ड „ १)
७६ भागवत-धर्म (ह. उ.) ६॥)
७७ श्रेयार्थी जमनालालजी „ ६॥)
७८ स्वतन्त्रता की ओर „ ४)
७९ बापू के आश्रम में „ १)
८० मानवता के झरने(माव.) १॥)
८१ बापू (घ० बिड़ला) २)
८२ गांधीजी की छत्रछाया में २॥)
८३ रूप और स्वरूप „ ॥=)
८४ डायरी के पन्ने „ १)
८५ ध्रुवोपाख्यान „ ।)
८६ स्त्री और पुरुष(टाल्स्टाय) १)
८७ मेरी मुक्ति की कहानी „ १॥)
८८ प्रेम में भगवान „ २)
८९ जीवन-साधना „ १।)
९० कलवार की करतूत „ ।)
९१ हमारे जमाने की गुलामी „ ।॥)
९२ बुराई कैसे मिटे ? „ १)
९३ बालकों का विवेक „ ।॥)
९४ हम करें क्या ? „ ३॥)
९५ धर्म और सदाचार „ १।)
९६ अंधेरे में उजाला „ १॥)
९७ कल्पवृक्ष (वा० अग्रवाल) २)
९८ लोक-जीवन (कालेलकर) ३॥)
९९ जीवन-साहित्य „ २)
१०० हिमालय की गोद में २)
१०१ जय अमरनाथ १॥)
१०२ लद्दाख यात्रा की डायरी २॥)
१०३ साहित्य और जीवन २)
१०४ कब्ज (म० प्र० पोद्दार) १)
१०५ राजनीति प्रवेशिका १)
१०६ जीवन-संदेश(ख. जिब्रान) १।)
१०७ अशोक के फूल ३)
१०८ जीवन-प्रभात ५)
१०९ कां.का इतिहास(२ भाग) २०)
११० पंचदशी (सं० य० जैन) १॥)
१११ सप्तदशी २)
११२ रीढ़ की हड्डी १॥)
११३ अमिट रेखायें ३)
११४ एक आदर्श महिला १)
११५ राष्ट्रीय गीत ।)
११६ तामिल-वेद(तिरुवल्लुवर) १॥)
११७ थेरी-गाथाएं १॥)
११८ बुद्ध और बौद्ध साधक १॥)
११९ जातक-कथा(आनंद कौ.) २॥)
१२० कृषि-ज्ञान कोष ५)
१२१ हमारे गांव की कहानी १॥)
१२२ साग-भाजी की खेती ३)
१२३ पशुओं का इलाज(प.प्र.) ॥)
१२४ रामतीर्थ-संदेश(३ भाग) १=)
१२५ रोटी का सवाल(क्रोपा०) ३)
१२६ नवयुवकों से दो बातें „ ।=)
१२७ पुरुषार्थ(डा० भगवान्‌दास) ६)
१२८ काश्मीर पर हमला २)
१२९ शिष्टाचार ॥)
१३० भारतीय संस्कृति ३॥)
१३१ आधुनिक भारत ५)
१३२ संस्कृत साहित्य-सौरभ
(२४ पुस्तकें) प्रत्येक ।=)
१३३ समाज-विकास-माला
(४४ पुस्तकें) प्रत्येक ।=)

समाज-विकास-माला की पुस्तकें

१. बद्रीनाथ
२. जंगल की सैर
३. भीष्म पितामह
४. शिवि और दधीचि
५. विनोबा और भूदान
६. कबीर के बोल
७. गांधीजी का विद्यार्थी जीवन
८. गंगाजी
९. गौतम बुद्ध
१०. निषाद और शबरी
११. गांव सुखी हम सुखी
१२. कितनी जमीन ?
१३. ऐसे थे सरदार
१४. चैतन्य महाप्रभु
१५. कहावतों की कहानियां
१६. सरल व्यायाम
१७. द्वारका
१८. बापू की बातें
१९. बाहुबली और नेमिनाथ
२०. तन्दुरुस्ती हजार नियामत
२१. बीमारी कैसे दूर करें ?
२२. माटी की मूरत जागी
२३. गिरिधर की कुंडलियां
२४. रहीम के दोहे
२५. गीता-प्रवेशिका
२६. तुलसी-मानस-मोती
२७. दादू की वाणी
२८. नजीर की नज्में
२९. संत तुकाराम
३०. हजरत उमर
३१. बाजीप्रभु देशपांडे
३२. तिरुवल्लवर
३३. कस्तूरबा गांधी
३४. शहद की खेती
३५. कावेरी
३६. तीर्थराज प्रयाग
३७. तेल की कहानी
३८. हम सुखी कैसे रहें ?
३९. गो सेवा क्यों ?
४०. कैलास मानसरोवर
४१. अच्छा किया या बुरा
४२. नरसी महेता
४३. पंढरपुर
४४. ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती

मूल्य प्रत्येक का छः आना

छः आना